आई सी ए आर - भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल

प्रमुख सलाह (अप्रैल, 01-15, 2025)

भारत के सभी क्षेत्रों में गेहूं की बुआई और अन्य पद्धतियाँ

फसल मौसम 2024-25

1. जिस क्षेत्र में फसल पककर तैयार हो गई है, खास तौर पर मध्य क्षेत्र में, उसे कम्बाइन रीपर से काटा जाना चाहिए। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे कटाई के समय उचित नमी (12-13%) सुनिश्चित करें और सुरक्षित भंडारण के लिए आवश्यक सफाई करें।

2. गेहूं की देर से बोई गई फसल जो अभी तक हरी है उसमें आवश्यकतानुसार तब सिंचाई करें जब हवा की गति कम हो, अधिमानतः शाम के समय, ताकि फसल को गिरने से बचाया जा सके।

3. पहाड़ी क्षेत्र में, किसानों को पीले और भूरे रंग के रतुआ पर नज़र रखनी चाहिए और प्रोपिकोनाज़ोल 25EC का छिड़काव करना चाहिए। एक लीटर पानी में एक मिली रसायन मिलाना चाहिए और इस प्रकार 200 मिली फफूंदनाशक को 200 लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ गेहूं की फसल में छिड़कना चाहिए।

4. भंडारण क्षेत्र की सफाई और कीटाणुशोधन को ठीक से सुनिश्चित करें और फर्श के सीधे संपर्क को रोकने के लिए लकड़ी के फूस पर गेहूं के बैग रखें। उचित वायु परिसंचरण के लिए ढेर के बीच उचित दूरी बनाए रखें।

5. भंडारण से पहले अनाज को अच्छी तरह से सुखा लें ताकि नमी सुरक्षित स्तर (<10%) पर बनी रहे। नए बीजों या अनाज को पुराने बीजों या अनाज के साथ न रखें। भण्डारण से पूर्व यह जांच कर लेनी चाहिए कि नये बीजों में कीट लगे हैं या नहीं। यदि कीट लगे हों तो भण्डार गृह में रखने से पहले सेलफोस से धुंआ कर देना चाहिए। अगली फसल के लिए उपयोग में लाए जाने वाले बीजों को भण्डारित करने के लिए कीटनाशक जैसे 6 मिली मैलाथियान या 4 मिली डेल्टामेथ्रिन से उपचारित करें। इसे 500 मिली पानी में घोलकर प्रति क्विंटल बीज की दर से उपचारित करें तथा छाया में सुखाकर भण्डारण पात्र में रख लें।

6. गेहूं की कटाई के बाद बची हुई फसल के अवशेषों को जलाना नहीं चाहिए तथा अवशेषों के साथ ही मूंग की फसल को बिना जुताई के बोना बेहतर होगा, इससे मिट्टी की उर्वरता बढ़ेगी।

01/04/25

(रतन तिवारी)

निदेशक